International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 5, July-August 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

हिन्दी लेखन और कोरोना

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, हिसार

How to cite this paper: Dr. Rajendra Prasad "Hindi Writing and Corona" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-5, August 2022, pp.1531-1533, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd51697.pdf

IJTSRD51697

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

प्राचीन समय से ही महामारी के बारे में साहित्य में पढ़ने को मिलता रहा है, लेकिन ऐसी महामारी के बारे में सुनने को नहीं मिला था। हम देख रहे है कि पिछले कुछ महीनों से महामारी ने जीवन, समाज, साहित्य दर्शन और व्यापार इन सभी पर असर डाला है। सर्वाधिक गरीब समाज को अत्यंत प्रभावित करने वाले कोरोना ने शिक्षा क्षेत्र और साहित्य को भी झकजोर दिया है । ऑनलाइन शिक्षा के परिणाम ने जहां छोटे बच्चों के सर्वांगीण विकास को प्रभावित किया, तो वहीं व्यापारी को अपने धंधे और मुनाफे के लिए परेशान भी किया है। लेखक अपनी रचना और साहित्य के लिए आशंकित है। वहीं एक आध्यात्मिक आदमी का नजरिया, दर्शन और उसकी आस्था भी बहुत हद तक प्रभावित हुई है। ये सब हम आज सोशल मीडिया पर बखूबी देख सकते हैं। कोरोना महामारी के संकट ने दूसरी चीजों की तरह ही साहित्य को भी प्रभावित किया है। हर षहर मे किताबों के प्रकाशन बंद पड़े हैं। कई किताबें छापेखानों में प्रतीक्षा कर रही हैं। देश की कई राजधानियों में हर साल लगने वाले साहित्यिक मंच सूने हो गए हैं। लाइब्रेरी धूल खा रही हैं। इसके साथ ही इस वायरस ने कवि और लेखकों को लिखने के लिए नए बिंब दिए हैं। उनके सोचने का तरीका और नजरियां भी बदल दिया है। आज लोगों के बचाव के लिए कोरोना महामारी पर कविताएं और कहानियां लिखी जा रही हैं। समाज के लोगों को जागरूक करने के लिए दीपक त्यागी की निम्न पंक्तियाँ दृष्टव्य है -

‘‘मिलकर कोरोना को हराना है,
घर से हमें कहीं नहीं जाना है,
हाथ किसी से नहीं मिलना है,
चहरे से हाथ नहीं लगाना है,
बार-बार अच्छे से हाथ धोने जाना है,
सेनेटाइज करके देश को स्वच्छ बनाना है,
बचाव ही इलाज है यह समझाना है,
कोरोना से हमकों नहीं घबराना है,
सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना है,
देशहित में सभी को यह कदम उठाना है।’’

वस्तुतः कहा जा सकता है कि अब बहुत-सी साहित्यिक रचनाओं में कोरोना वायरस उसका केंद्र या उसका बिंब बन गया है । ठीक उसी तरह जैसे विश्वयुद्ध के दौर में कई लेखकों के उपन्यास और कविताओं में उस त्रासदी का दंश उभरकर आया था। ऐसे कई लेखक और कवि हैं जिनकी साहित्यिक रचनाओं में विश्वयुद्ध का प्रभाव नजर आया है। हालांकि साहित्य की अभिव्यक्ति कभी रुकती नहीं है। जिस तरह से एक व्यापारी की किराना की शॉप लॉकडाउन के दौरान बंद रही, वैसे साहित्य की अभिव्यक्ति कभी बंद नहीं हुई है। साहित्य सृजन हर हाल में जारी रहा। ऐसे में सोशल मीडिया की भूमिका बेहद अहम तौर से उभरकर सामने आई है। सोशल मीडिया चाहे वो फेसबुक हो या ट्विटर। साहित्य के लिए एक बड़े मंच के तौर पर उभरकर सामने आए हैं । आलेख और कविता या कहानी के अंश पहले भी फेसबुक पर पोस्ट किए जाते रहे हैं। लेकिन अब जिस तरह से इसे एक अवसर के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है यह बेहद ही अच्छी बात है। महामारियों के कथानक पर केंद्रित अतीत की साहित्यिक रचनाएं आज के संकटों की भी शिनाख्त करती हैं। हिन्दी लेखन में अमर उजाला काव्य की वेबसाइट पर पहली बार आए ’मेरे अल्फ़ाज़’ अमर उजाला काव्य के पाठकों का विशेष मंच देखने को मिला; कोरोना के बारे में जागरूक करने वाली कोरोना वायरस - “मन“ बावरी निम्न पंक्तिया दृष्टव्य है।

‘‘जान लेवा करुणा तुम्हारी
विपद मड़रायें सर पर हमारी
देख भाई ! सम्भल कर चलना
हार न माने हर्गिज ये वरना
भीड़ से अभी करो परहेज
ढका हुआ पहनो वेश
आधुनिकता का हाथ न बढ़ाओं
मुंह ढक करो बातें, दूरी बनाओं
स्वदेशी सा करो नमस्कार
हाथ धोओ बारम्बार
नींबू-संतरा-मौसमी खाओ
दालचीनी का चटकारा लगाओ
कृपा करो हे भगवन !..’’

हिन्दी लेखन काव्य हमें मनुष्य जिजीविषा की याद दिलाने के साथ साथ नैतिक मूल्यों के ह्रास और मनुष्य अहंकार, अन्याय और नश्वरता से भी आगाह करता हैं। इतिहास गवाह है कि अपने अपने समयों में चाहे कला हो या साहित्य, संगीत, सिनेमा- तमाम रचनाओं ने महामारियों की भयावहताओं को चित्रित करने के अलावा अपने समय की विसंगतियों, गड़बड़ियों और सामाजिक द्वंद्वों को भी रेखांकित किया है। आज की ये रचनाएं सांत्वना, धैर्य और साहस का स्रोत भी बनी हैं। वर्तमान में युवा पीढ़ी हि वर्तमान में युवा पीढ़ी हिंदी लेखन में अपनी किस्मत आजमा रही है। आज से देखा जाता है कि सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी टाइपिंग में आते हुए भी मंगलम टाइपिंग के माध्यम से या फिर वॉइस टाइपिंग के माध्यम से अपनी भावनाओं को कविताओं के माध्यम से सोशल मीडिया में समायोजित किया जा रहा है। आज देखने में चाहे संकोच लगे कि काव्य लेखन का जो स्वरूप है वह बदलता जा रहा है लेकिन कोरोना काल के दौरान जो स्वरूप हिंदी लेखन में आया है। जहां नकारात्मक है तो वही सकारात्मक रूप भी देखा गया है। बदलते परिवेश में देखा गया कि किताबों की मांग सोशल मीडिया पर ज्यादा रहती है। जैसे डॉ0 विजय शर्मा ने लिखा-

"सन् 2020 का पूरा साल कोरोना के काल के गाल में समा गया। पूरी दुनिया लॉकडाउन हो गई। 2021 की आशा में सब बैठे थे मगर तब तक कोरोना की दूसरी लहर आई और बहुत कुछ निगल गई। चारो ओर सन्नाटा छा गया। मगर मनुष्य की जिजीविषा बहुत शक्तिशाली होती है। वह इस कुकाल में भी जीवित रही। जिजीविषा को एक बड़ा सहारा साहित्य से मिलता है। साहित्य हमें राह दिखाता है। 2021 में जब पत्रिकाएँ लगभग बंद थीं, प्रिंटिंग व्यवसाय दम तोड़ गया था, अखबारों की बिक्री-विज्ञापन मृतप्रायः था। ऐसे समय में साहित्य ने अपने लिए नए-नए रास्ते निकाले। साहित्य में नए अंकुर फ़ूटे, नई शाखाएँ विकसित हुईं। नए माध्यम सामने आए।''

हिन्दी लेखन को एक नया स्वरूप देने का श्रेय सोशल मीडिया को जाता है। क्योंकि कोरोना के कारण जहां लाइब्रेरी और कॉलेज बंद हो गए तो वही सोशल मीडिया ने अपने विविध ग्रुप के माध्यम से लोगों को जागरूक किया और उन्हें मनोरंजन के साथ-साथ हिंदी लेखन सामग्री को भी पाठकों तक पहुंचाया। कोरोना जैसी महामारी के प्रति जागरूक करने में इन्साटाग्राम ने भी अपनी पहल की। इन्साटाग्राम पर छोटे-से बच्चे सपना सुनील की कविता को देखा जा सकता है-

''ओ कोरोना तू कहां से आया।
सब कुछ हो गया पराया पराया।
तेरा आना किसी को ना भाया।
मम्मी बोले हाथ धोए।
घर से बाहर कहीं ना जाए।
सखा सहेली सब भूल जाए।
स्कूल की टीचर की याद सताए।
नानी का घर हमें बुलाए।
शोपिंग के लिए मन ललचाए।
बर्थडे फीका फीका पड़ जाए।
ओ कोरोना तू बता हम छोटे छोटे बच्चे
कैसे अपना दिल बहलाए।
तेरा भय इतना सताए।''

ऐसे पाठक जिन्होंने कभी कंप्यूटर को छुआ भी नहीं था, वह पाठक आज सोशल मीडिया के माध्यम से बहुत सी कविताओं को पाठक तक पहुंचा रहे है। अपने लेखन कार्य में ऊर्जावान होकर पाठक के समक्ष पहुंचते है। जो लेखक अपने लेखन कार्य के बारे में प्रचार-प्रसार करने में अपने आपको एक सीमित दायरे तक समझते थे; आज उनको सोशल मीडिया के माध्यम से एक मंच मिला गया है। माना कि समाज के बदलते स्वरूप के कारण हिंदी लेखन प्रभावित हुआ है, लेकिन कहीं न कहीं करोनो के कारण लाभान्वित भी हुआ है। क्योंकि जहां हिंन्दी पुस्तकों को पढ़ने वाले पाठकों की संख्या दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही थी, वहीं सोशल मीडिया के माध्यम से यह संख्या बहुत ज्यादा बढ़ गई है। कुछ लोगों का विचार था कि उन्हें हिंदी में लिखना नहीं आता या उन्हें टाइपिंग नहीं आती; लेकिन जैसे ही मीडिया में इस बात की पुष्टि हुई कि ऐसे सॉफ्टवेयर आए हुए हैं जिससे लेखन कार्य बोलकर किया जा सकता है, हिन्दी लेखन कार्य ने तीव्रता पकड़ी।

मानव सेवा भाव ने लेखकों को जहां कोरोना वायरस से बचने के लिए जागरूक किया; वहीं सोशल मीडिया ने अपनी लोकप्रियता से पाठकों को लेखक बना दिया। आज वह स्वयं अपनी अभिव्यक्ति को टाइप कर लेता है और अपने सोशल मीडिया के माध्यम से पाठकों तक पहुंचा देता है। जैसे सोशल मीडिया पर कोरोना के सन्दर्भ में वायरल मेरा नाम है कोरोना - बिजय बहादुर की हिन्दी कविता की पंक्तियां दृष्ट्व्य है-

"मैं मौत की सौदागर मेरा नाम है कोरोना
सम्पर्क में जो आये, पड़े जान से हाथ धोना।
वुहान में मैं जन्मी, "मृत्यु मेड इन चाइना"।
हूं ऐसी महामारी जिसकी दवाई कोई ना।।
मैं मौत की सौदागर मेरा नाम है कोरोना।।
विश्व स्वास्थ्य आपदा की, बनी मैं हूं कारण।
वायवीय सम्पर्क से , पाती हूं मैं विस्तारण।।
सावधानी बरतने से होता मेरा निस्तारण ।
निरोधक क्षमता वाले रोकते प्रसारण।।
दूराव बनाये रखिए, एक से दूसरे को हो ना।
मैं मौत की सौदागर मेरा नाम है कोरोना।।''

आज हिंदी लेखन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने में कोरोना का भी योगदान है। बहुत से लेखकों ने अपने हिंदी काव्य के माध्यम से लोगों को करोनो के बारे में जागरूक किया और साथ में ऑनलाइन शिक्षा पद्वति पर शोध करके नकारात्मक और सकारात्मक स्वरूप पर प्रकाश डाला है। स्कूल कॉलेजों में ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की खामिया और खूबियां दोनों को चरितार्थ करने में हिंदी लेखन का अहम योगदान रहा है; क्योंकि हमारे देश में अधिकतर हिंदी प्रेमी है और हिन्दी में ज्ञान अर्जित करने चाहते है। इसी तरह राजकमल प्रकाशन समूह फेसबुक लाइव कर रहा है. 'साहित्य आजतक' से अपने अनुभव बताते हुए इस प्रकाशन समूह के प्रबंध

निदेशक अशोक महेश्वरी का कहना है कि... 'लोगों का घर पर रहना जरूरी है तभी हम महामारी की इस लड़ाई में जीत हासिल कर सकते हैं। फेसबुक लाइव के जरिए लोग लेखकों से सीधे जुड़ रहे हैं, उनसे कविताएं, कहानियां, शायरी, गीत सुन रहे हैं। किस्से कहानियों का हिस्सा बन रहे हैं। यह न केवल लोगों को साहित्य से जोड़ रहा है बल्कि उन्हें इस समय में दुनिया से जुड़े रहने का अहसास भी दे रहा है। यह सकारात्मक ऊर्जा के संचार में सहायक है, जिसकी जरूरत अभी सबसे ज्यादा है।''

वर्तमान में हिन्दी साहित्यकारों ने अपने लेखन कार्य के माध्यम से कोरोना की तीसरी लहर के बढ़ते कदम की ओर संकेत दिया है। कोरोना ने अपने कदम बढ़ाने प्रारंभ कर दिए हैं जिससे कहा जा सकता है कि अभी इसकी आहट ही सुनाई दे रही है, लेकिन जिस प्रकार से आम आदमी जीवन के प्रति लापरवाह हुआ है, उससे यही आशंका उत्पन्न होने लगी है कि ओमिक्रोन के रूप में दस्तक देने वाला यह वायरस निश्चित ही अपना प्रभाव दिखाएगा। हिन्दी साहित्यकार अपने लेखन के माध्यम से सोषल मीडिया पर दिन-रात लोगों को जागरूक कर रहे है लेकिन भारतीय समाज का बड़ा हिस्सा अपने आपको नियम और कानून पालन करने की मानसिकता नहीं बना पा रहा है। इसके कारण जहां व्यक्तिगत स्तर पर तो कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, वहीं यह लापरवाही समाज के लिए भी अत्यंत घातक होती है। कोरोना संक्रमण की पिछली दो लहरों ने समाज को बहुत बड़ा सबक दिया, लेकिन इस सबक का प्रभाव भी धीरे-धीरे विस्मृत होता चला गया और समाज ने इस प्रकार से जीना प्रारंभ कर दिया, जैसे कोरोना आया ही नहीं था।

हम सब मानते है कि पहले और दूसरे संक्रमण के दौरान लगाए गए लॉकडाउन की अवधि के दौरान जनमानस अच्छे बुरे की पहचान कर चुका है, लेकिन ऐसा लगता है, हम जानते हुए अनजान बन जाते हैं। इसी कारण यह भी परिलक्षित हो रहा है कि हम जीवन के प्रति सचेत नहीं हैं। वर्तमान में तीसरी लहर की आगोश में विश्व के कई देश आ चुके हैं। दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और अमेरिका जैसे अपने आपको अत्यंत समृद्ध मानने वाले जैसे देशों की स्थिति विकरालता की ओर बढ़ती जा रही है। कई देश पहली और दूसरी लहर के संत्राश से बाहर निकल भी नहीं पाए थे, कि अचानक तीसरी लहर ने भी दस्तक दे दी है। भारत के लिए सुख की खबर यह मानी जा सकती है कि भारत की वैक्सीन पहले भी सकारात्मक परिणाम देने में सार्थक प्रमाणित हुई है और अब तीसरी लहर की भयावह आशंका के चलते भी यह दावे के साथ कहा जाने लगा है कि भारत की वैक्सीन ओमिक्रोन को भी परास्त करने में सफल ही होगी। लेकिन इसके बाद भी हमें किसी भी प्रकार से आश्वस्ति रखने की आवश्यकता नहीं है। आश्वस्ति का भाव निश्चित ही मनोबल बढ़ाने का कार्य करती है, परंतु इस मनोबल को बनाए रखने के लिए किसी भी प्रकार की अफवाह से मुक्त रखना हम सभी का प्राथमिक कर्तव्य होना चाहिए।

अगर देखा जाए तो कोरोना के समय 'सोषल मीडिया' के माध्यम से हिंदी साहित्य लेखन का संप्रेषण बेतहाशा तौर पर बढ़ा है। जो लोग पहले शेयर नहीं करते थे, अब वे भी अपनी कविता, कहानी और डायरी को शेयर कर रहे हैं। साहित्य विमर्श के लिए अब ज्यादातर लेखक और कवि फेसबुक पर लाइव आ रहे हैं। इसके साथ ही जूम और स्काइप जैसे एपलिकेशन का सहारा लिया जा रहा है। लेखकों के साथ ही पाठक भी इसमें पार्टिसिपेट कर चर्चा कर रहे हैं। गद्य से लेकर पद्य तक की अभिव्यक्ति हो रही है। यहां सबसे अहम है कि किसी मंच की जरुरत नहीं। किसी किताब की जरुरत नहीं। खासतौर से नए और अप्रकाशित लेखकों के लिए सोशल मीडिया वरदान ही साबित हो रहा है। इसमें उनकी रचनाओं के लिए हाथों-हाथ अच्छी और बुरी प्रतिक्रियाएं सामने आ जाती हैं। एक और अच्छी बात यह भी है कि साहित्य की बोझिल और उबाऊ महफिलों और गोष्ठियों से लोगों को निजात मिली है। यहां स्वतंत्रता भी मिली है कि कौन किसे पढ़े या देखे यह उसकी मर्जी है। इसमें साहित्यिक पाठ के दौरान किसी बंद कमरे में फंस जाने का डर नहीं कि कोई एक बार कहानी सुनने बैठ गया तो वह बीच में उठ नहीं सकता। जहां अच्छा लिखा जा रहा है वहां पाठक ठहरते हैं और उसे आगे शेयर करते हैं। जहां ठीक नहीं है वहां बगैर प्रतिक्रिया दिए ही आगे बढ़ जाने की सुविधा है। आज कोरोना महामारी अपने समय और भविष्य को प्रभावित करती हुई हिन्दी लेखन कार्य के स्वरूप को भी बदल रही है।

संदर्भ

[1] https://www.prabhasakshi.com/literaturearticles/poem-on-coronavirus

[2] https://www.amarujala.com/kavya/mere-alfaz/mon-bhattacharya-korona-virus

[3] https://www.amarujala.com/kavya/sahitya/hindi-literature-in-the-corona-period-of-2021

[4] https://www.amarujala.com/kavya/mere-alfaz/sapna-sunil-poem-on-corona

[5] https://www.amarujala.com/kavya/mere-alfaz/bijay-bahadur-main-maut-ki-saudagar

[6] https://www.aajtak.in/literature/story/coronavirus-and-books-sahitya-tak-and-writers-digital-initiative-during-nationwide-lockdown-1047100-2020-04-02